एक भुतही कहानी का अन्त!

चित्रः कनक

"उफ! कितना डरावना लग रहा है!" लड़की ने सावधानी से धीमे-धीमे कदम बढ़ाते हुए कहा। "और यह दरवाज़ा भी तो कितना भारी है!" कहते हुए उसने दरवाज़े को हल्के से छुआ ही था कि वो अपने आप बन्द हो गया।

"हे भगवान! और मुझे पूरा यकीन है कि दरवाज़े में हैण्डिल भी नहीं है। तुम ने हम दोनों को अन्दर बन्द कर दिया!" आदमी ने कहा।

"दोनों को नहीं, सिर्फ एक को", कहते हुए लड़की उसकी आँखों के सामने दरवाज़े को चीरती हुई गायब हो गई।

पेंटिंग : किशोर डांगरे

मकड़ी

जब सब लोग चले जाएँगे
न होगा घर में कोई रखवाला
मैं, मकड़ी जड़ दूँगी दरवाज़े पर
अपने पतले-पतले जालों वाला ताला

पोलिश भाषा में लिखी इस कविता को यानिना पोराजिंस्का और यान जेहवा ने लिखा है। (हिन्दी में अनुवाद - प्रबोध कुमार)

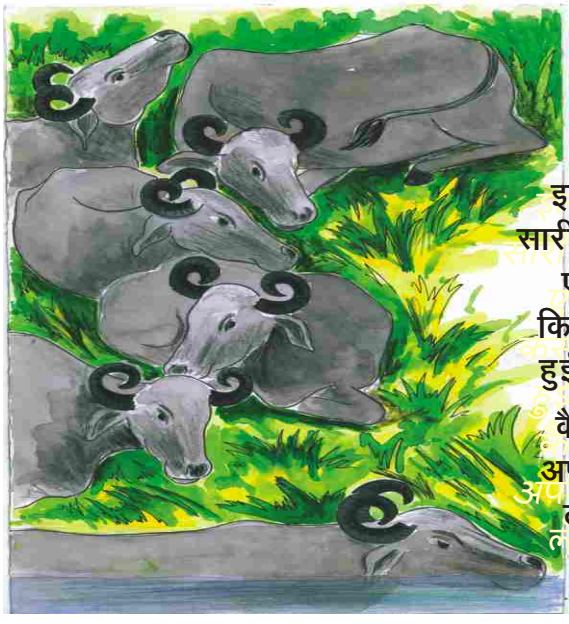

मुर्रा भैंसें

विनोद कुमार शुक्ल

इतनी सारी मुर्रा भैंसें
सारी की सारी जुड़वा भैंसें
एक जैसी मुर्रा भैंसें
किसकी-किसकी खोकर
हुई इकट्ठी इतनी भैंसें
कैसे पहचानेगा कोई
अपनी-अपनी खोई भैंसें
ले आएगा हर कोई
किसी-किसी की
अपनी जैसी भैंसें